15 19-9-67 ओम् शान्ति रात्री क्लास

पोईंट होना चाहिये। क्योंकि हर एक अपने लिये बादशाही स्थापन करते है। यह तो निश्चय है कि शिव बाबा बाप भी है तो टीचर भी है गुरू भी है। यह तो निश्चय है ना। समझते हुये भी कब-2 भूल हो जाती है। तुम जानते हो कि यह बाप दादा है। यह जानते भी कि मैं विश्व का मालिक बनने वाला हूँ फिर भी तूफान बहुत आते है कितनी खयालाते रहती है। तुम भी समझते हो कि जब बाप से हम वर्सा लेने वाले है ना चाहते हुये भी विकर्म और अकर्तव्य कार्य हो हो जाता है। अच्छे-2 जो बाबा को बहुत प्यार करते है वो भी लिखते है कि बाबा मैं याद मैं आधा घण्टा भी नही रह सकता हूँ। लन, सीढी के चित्र छप रहे है। एक-2 चित्र भी दस हज़ार छपवा रहे है। यह मुख्य चित्र है। गीता के भगवान वाला भी चित्र मुख्य है। बाबा ने लिखा है कि टिन शीटस् पर बनवाओं। बड़े-2 स्टेशनो पर लगाओं। बोलो हम कोई कमाई के लिये नही लगाते हैं। यह तो भारत के ही कल्याणार्थ हम अपने ही तन मन धन से कर रहे है। परन्तु फिर विघ्न भी तो बहुत ही पड़ते है ना। बाबा ने देहली वालों को लिखा है कि देहली में 3-4 म्यूजियम हो सकते है। देहली तो बहुत बड़ी है ना। बहुत सेन्टर्स होगें बहुत आकर समझेगें। ... खर्चा तो बहुत होता है। ऐसा तो कोई भी शाहुकार नही है जो कि पैट से इतना खर्चा कर लेवें। आने वाले तो है ... टूलेट। याद की यात्रा मे बाप कहते है कि बहुत मेहनत है। देह-अभिमान होने कारण भूलें बहुत होती है। पावन बनने की प्रतिज्ञा करके भी अगर फिर भूलें करते है तो पतित बन जाते है। लिखते है कि हम सेन्टर पर नही जावेगें। मै लिख देता हूँ कि सेन्टर पर जाने की मना नही है। ऐसे केस बहुत होते रहते है। सबसे जास्ती चोट इसमे ही लगती है। इसमे बहुत खबरदारी रखनी चाहिये। बहुत ... घाटा पड़ता है। तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर हमारा बाबा बाप भी है तो टीचर और सतगुरु भी है। हम आते ही है बेहद के बाप से वर्सा लेने। आते रहेगी वृद्धी होती रहेगी। ब्राह्मणों का झाड़ ही फिर देवताओ का होगा। बाकी तो है बाइप्लाटस। आलराउन्ड पार्टिज़न देवताओं का ही चलता है। 84 जन्म भी तो सभी नही लेते है। यह भी समझते हो कि यह नालेज कोई और दे नही सकते है। बाप समझाते है कि भक्ति तो है उतरती कला। ज्ञान से होती है चढ़ती कला। अभी है धर्म कर्म से भी भ्रष्ट। देवतायें तो है श्रेष्ट। कर्म भ्रष्ट वाले ही इनके आगे जाकर महिमा गाते है कि तुम ऐसे हो हम ऐसे है। बाप भी कहते है कि तुम ही गिरे हो पुजारी बने हो फिर तुम्हे पूज्य बनेगें। पूज्य बनाने वाला एक ही बाप है। सब मुक्ति और जीवनमुक्ति मे चले जावेगें। फिर है जीवनबंध। बाप ने समझाया है कर्म अकर्म विकर्म का राज़। कर्म अकर्म होता है जबकि तुम सतयुग में होते हो। फिर रावण राज्य मे तुम्हारे कर्म विकर्म बन जाते है। बच्चे भी समझते है कि बाबा की बात तो बरोबर ठीक है। यह सभी बाते तुम बेहद के बाप द्वारा ही सुन रहे हो। तो अब बाप की श्रीमत पर चलना है। परन्तु माया चलने ही नही देती है। अपना चार्ट रोज देखना है। अपना ही कान पकड़ना चाहिये। आत्मा अपने शरीर को चमाट मारती है। यह भूल नही करनी चाहिये। दुःख तो भासता है ना। आत्मा ही दुःखी सुखी होती है। बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिये। स्वप्ने में भी ख्याल मे नही होगा कि बाप आकर पढ़ाते है। अब तुम पर्सनेल्टी हो शिव बाबा के। शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा जो समझाते है तो उनको फालो करना चाहिये ना। करते भी अगर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार श्रीमत पर चलते हो। जितना हो सके रात को बच्चियों को तो खास सम्भाल कर बाहर जाना चाहिये। बाबा की बच्चियों का ख्याल

*** ******** ************** ********************************

है। सवेरे जाती है तो मनुष्य समझते है कि मन्दिर आदि मे जाती होगी। कब दुःख नही देगें। द तक्की कब भी ... जेवर पहन कर नही जाना है।

**** * ******** * **** * ******* * *** यहा पर भी पहन कर नही आना है। घर मे भी नुकसान हो जाता है। फिर भी रखना ही पड़ता है किसी समय के लिये। मेहमानो नही ... मे भी कब नही आना चाहिये। माया संतुष्ट नाराज़ करेगी परन्तु खबरदार रह कर बचते रहना है। ओम